८—अग्निपुराण

नारदपुराण के ९९ अध्याय में अग्निपुराण का परिचय इस प्रकार दिया गया है—

अथातः संप्रवक्ष्यामि तवाग्नेयपुराणकम् ।
ईशानकल्पवृत्तान्तं वसिष्ठायाऽनलोऽब्रवीत् ॥
तत्पञ्चदशसाहस्रं नाम्ना चरितमद्भुतम् ।
पठतां शृण्वतां चैव सर्वपापहरं नृणाम् ॥

किन्तु मत्स्यपुराण में लिखा है कि—

यत्तदीशानकं कल्पं वृत्तान्तमधिकृत्य च ।
वसिष्ठायाग्निना प्रोक्तमाग्नेयं तत् प्रचक्षते ।
तच्च षोडशसाहस्रं सर्वक्रतुफलप्रदम् ॥

उपलब्ध अग्निपुराण में नारदपुराणोक्त विषयानुक्रम तो ठीक-ठीक मिलता है, परन्तु ईशानकल्प का वृत्तान्त नहीं मिलता है, बल्कि अग्निपुराण के दूसरे अध्याय में "प्राप्ते कल्पे तु वाराहे कूर्मरूपोऽभवद्धरिः" इस प्रकार वाराहकल्प का प्रसंग है। और वसिष्ठ के साथ अग्नि की कथा का कोई प्रसंग नहीं है। ब्रह्मा के मानसपुत्र मरीचि ऋषि ने द्वादशवार्षिक सत्र में अग्नि को जो धर्मानुष्ठान का उपदेश दिया था उसी के आधार पर इस पुराण का आरम्भ हुआ है इसकी श्लोक संख्या १५००० है। स्कन्द-पुराण के शिवरहस्य खण्ड में लिखा है कि अग्निका माहात्म्य प्रकाशन करना ही अग्नि-पुराण का प्रधान लक्ष्य है। पर इस विषय की कोई कथा अग्निपुराण में नहीं मिलती है। इस समय अग्निपुराण और वह्निपुराण के नाम से दो पुराण मिलते हैं। दोनों के विषयानुक्रम में कुछ समानता भी है वल्लालसेन ने अपने दानसागर में अग्निपुराण के कुछ श्लोक उद्धृत किये हैं जो प्रचलित वह्निपुराण में नहीं मिलते। अग्निपुराण के बहुत से विषय वह्निपुराण में मिलते है।

इसके वक्ता अग्नि और श्रोता महर्षि वसिष्ठ हैं। इसमें ईशानकल्प की कथा है। अग्निपुराण को भारतीय समस्त विद्याओं का कोश कहा जाता है। इसके अनुशीलन करने से पता चलता है कि पुराणों का उद्देश्य जनसाधारण में विद्याओं का प्रचार करना है। इसके ३८३ अध्यायों में विविध विषयों का सन्निवेश आश्चर्यजनक है। इसमें अवतारतत्त्व के साथ-साथ रामायण, महाभारत एवं हरिवंश की कथाओं का सार दिया गया है। अनेकविध मन्दिरनिर्माण की कला के निरूपण के साथ-साथ मूर्तिप्रतिष्ठा और पूजाविधान विस्तृत रूपसे बतलाया गया है। चारों उपवेद, वेदाङ्ग एवं दार्शनिक विषयों के दिग्दर्शन के अतिरिक्त पशुचिकित्सा धर्मशास्त्र राजनीति आयुर्वेद आदि शास्त्रों का वर्णन विशेष रूप में है। अन्त में काव्य के सुन्दर निरूपण के साथ

Scanned with CamScanner

अलंकार शास्त्र का विचार बड़े मार्मिक ढंग का है। छन्द शास्त्र का निरूपण ८ अध्यायों में किया गया है। व्याकरण की छानबीन अपूर्व है। कौमार व्याकरण के नाम से एक छोटा सा उपयोगी व्याकरण, एकाक्षरकोश, नामलिंगानुशासन एवं योगशास्त्र के अंगों का विवेचन और अद्वैत वेदान्त का सार संकलित है। इस प्रकार अग्निपुराण में भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के सभी विषयों का संक्षेप में समावेश हो गया है। इसके अध्ययन से ज्ञान-विज्ञान का पूर्ण परिचय मिलता है। सभी विद्याओं के समावेश हो जाने के कारण ही इसे भारतीय विद्याओं का कोश कहा गया है। इसीलिये कहा गया है कि "आग्नेये हि पुराणेऽस्मिन् सर्वा विद्याः प्रदर्शिताः"। इसमें ३८५ अध्याय हैं, जिनमें आयुर्वेद, गान्धर्ववेद, अर्थशास्त्र तथा वेदाङ्गों का भी सुन्दर वर्णन है। इसमें पुराण के पंचलक्षण के अतिरिक्त हिन्दू-साहित्य और संस्कृति के सम्पूर्ण विषयों का समावेश है।

नारदपुराण का विषयानुक्रम और प्रचलित अग्निपुराण की विषयसूची को मिलाकर देखने पर सरलता से मालूम पड़ता है कि ईशानकल्प एवं अग्नि-वसिष्ठ संवाद को छोड़कर प्रायः सभी कथायें मिलती जुलती हैं। इसमें थोड़ा ही अदल-बदल हुआ है। मालूम पड़ता है कि इसका कुछ वास्तविक अंश पुराणान्तरों या उपपुराणों में मिल गया है।

Scanned with CamScanner